ISSN - 0973-1628

152

Issue - 152, Vol-XV (9), November - 2016

www.researchlink.co

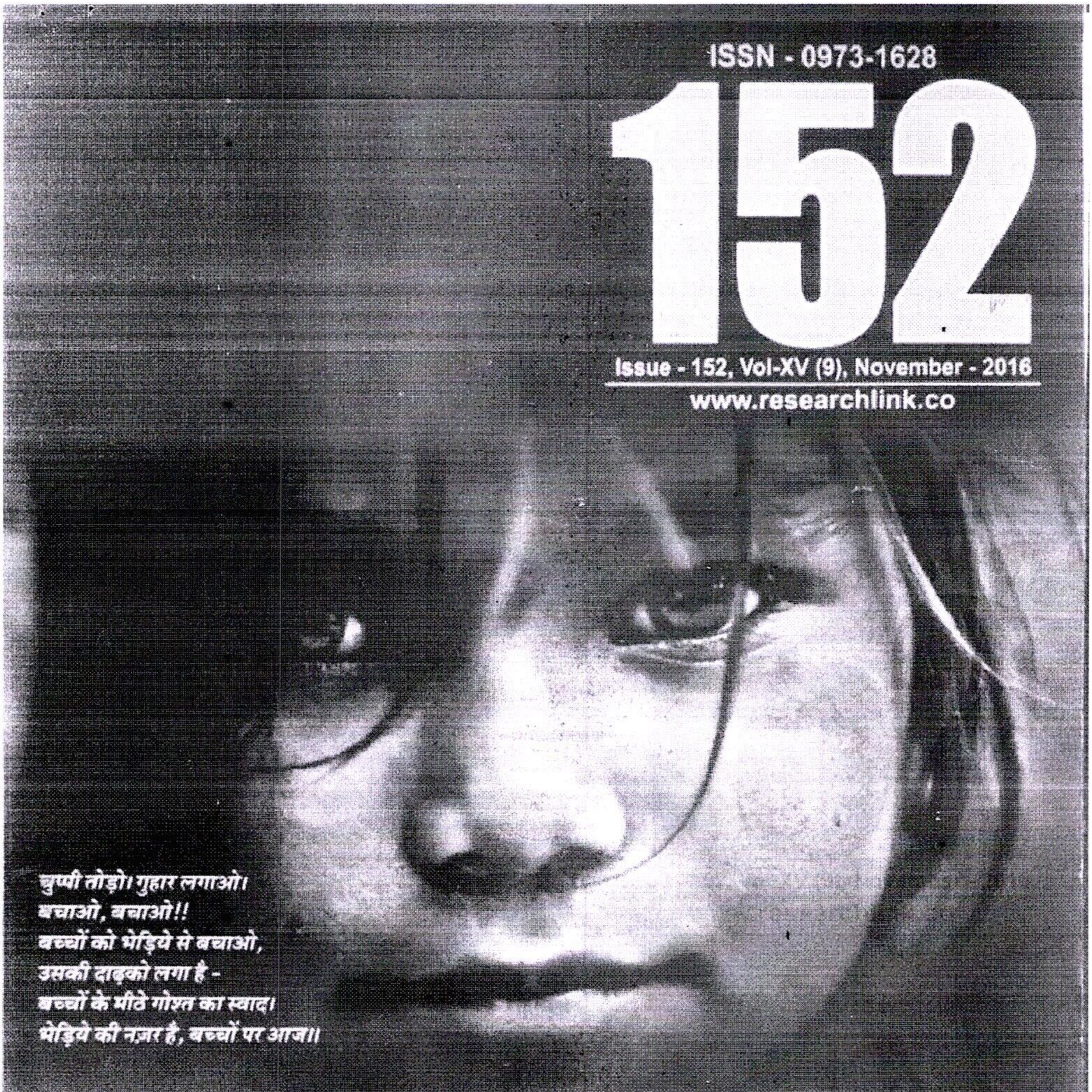

चुप्पी तोड़ो। गुहार लगाओ।
बचाओ, बचाओ!!
बच्चों को भेड़िये से बचाओ,
उसकी दाढ़को लगा है -
बच्चों के मीठे गोश्त का स्वाद।
भेड़िये की नज़र है, बच्चों पर आज।।

An International Registered and Referred Monthly Journal

Impact Factor 2.782 2015

RESEARCH Link

Kala, Samaj Vigyan awam Vanijya

₹ 250/-

:: CIRCULATION ::

Andaman-Nicobar / Bihar / Chattisgarh / Delhi / Goa / Gujarat / Haryana / Himachal / Jammu & Kashmir / Karnataka / Madhya Pradesh / Maharashtra / Punjab / Rajasthan / Sikkim / Uttar Pradesh / Uttranchal / West Bengal

An International, Registered & Referred Monthly Journal
Education
Research Link - 152, Vol - XV (9), November - 2016, Page No. 101-103
ISSN 0973-1628 ■ RNI - MPHIN-2002-7041 ■ Impact Factor - 2015 - 2.782

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा पर उनके आत्म सम्प्रत्यय के प्रभाव का अध्ययन

प्रस्तुत शोधपत्र में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा पर उनके आत्म-सम्प्रत्यय के प्रभाव का अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन के लिए न्यादर्श के रूप में बेमेतरा जिले के ग्रामीण परिवेश के 465 उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों का चयन किया गया। उपकरण के रूप में उपलब्धि अभिप्रेरणा के मापन हेतु डॉ.बीना शाह द्वारा निर्मित उपलब्धि अभिप्रेरणा मापनी (1986) तथा आत्म-प्रत्यय मापन के लिए डॉ.एस.पी.अहलुवालिया (रिवाइज्ड 2005) द्वारा निर्मित सेल्फ कॉन्सेप्ट स्केल को चयनित किया गया। सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए 2 X 2 प्रसरण विश्लेषण का प्रयोग किया गया। परिणाम में पाया गया कि विद्यार्थियों के उपलब्धि अभिप्रेरणा पर आत्म-सम्प्रत्यय एवं लिंग का सार्थक मुख्य प्रभाव नहीं पाया गया तथा आत्म-सम्प्रत्यय एवं लिंग का सार्थक अंतःक्रियात्मक प्रभाव नहीं पाया गया।

डॉ.(सुश्री) पद्मा अग्रवाल* एवं श्रीमती ज्योत्सना गढ़पायले**

भूमिका :

शिक्षा एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। शिक्षा को जीवन से पृथक नहीं किया जा सकता है। यदि प्रगति ही जीवन है, तो शिक्षा इस प्रगति को उचित दिशा में नियंत्रित एवं संचालित करती है। शिक्षा की इस प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। शिक्षक का यह कर्तव्य है कि बालक की कुशलता का एवं दक्षता के मापन के आधार पर ही उन्हें उपलब्धि प्राप्त करने के समुचित अवसर प्रदान करे। अभिप्रेरणा का जीवन की संपूर्ण उपलब्धि के साथ घनिष्ठ संबंध होती है। विद्यार्थी की योग्यता, कौशल, संवेगात्मक बुद्धि, इच्छा, प्रयास तथा उसका आत्म–सम्प्रत्यय ऐसे महत्वपूर्ण कारक है, जो उपलब्धि को प्रभावित करते है। शिक्षा चाहे औपचारिक हो या अनौपचारिक बालक की मानसिक क्षमताओं का परिमार्जन करती है, नए–नए अनुभव प्रदान करती है, जिससे प्रत्यय निर्माण प्रभावित होता है।

उपलब्धि अभिप्रेरणा :

अधिगमकर्ता की महत्वाकांक्षा एवं उपलब्धि और प्रेरणा के स्तर पर भी अधिगम प्रक्रिया की सफलता काफी सीमा तक निर्भर करती है। उचित सफलता के लिए महत्वकांक्षा उपलब्धि प्रेरणा के स्तर का न तो अपनी सामर्थ्य और शक्तियों से बहुत अधिक होना अथवा सिद्ध हो सकता है और न ही बहुत कम होना। रिली एवं लेविस (1983) ने उपलब्धि अभिप्रेरणा को इस प्रकार परिभाषित किया है, 'किसी चीज को अपने से करने, उसे अच्छे ढंग से करने तथा उसमें विशिष्टता दिखाने की स्वीकारात्मक इच्छा को उपलब्धि अभिप्रेरणा कहा जाता है।"

आत्म सम्प्रत्यय :

आत्म सम्प्रत्यय से आशय है कि एक व्यक्ति अपने आंतरिक गुणों तथा व्यवहार आदि के संबंध में जो मत रखता है, वहीं उसका आत्म–सम्प्रत्यय कहलाता है। व्यक्ति का आत्मप्रत्यय उसके चिंतन पर आधारित होता है। डोनाल्ड फेकर (1974) के अनुसार "आत्म प्रत्यय व्यक्ति का स्वयं के आत्म के प्रति संपूर्ण दृष्टिकोण है, यह प्रत्यक्षीकरण, विचारों तथा अभिवृत्तियों का एक अमूर्त समूह है, जो व्यक्ति के प्रति अन्य व्यक्तियों की विचारधाराओं की मात्रा की भिन्नता को स्पष्ट करता है।"

ज्ञानगादेवन, मीनाक्षी (2007) ने पाया कि हाई स्कूल में अध्ययनरत् छात्रों, विद्यालय प्रकार, विद्यालयों की स्थिति के संदर्भ में उपलब्धि प्रेरणा एवं चिंता के मध्य सार्थक संबंध पाया गया एवं छात्राओं की उपलब्धि प्रेरणा एवं चिंता के मध्य सार्थक संबंध नहीं पाया गया। विद्याधर (2008) ने पाया कि माध्यमिक विद्यालयों के सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों की अपेक्षा जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों में मानसिक योग्यता एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा कम पाई जाती है। सिंग एवं कौर (2009) ने पाया कि उच्च बुद्धि स्तर के किशोरों में उच्च उपलब्धि प्रेरणा पाई गयी तथा बालक किशोरों ने उपलब्धि प्रेरणा अधिक पाया गया। देशमुख (2000) ने पाया कि उच्च व निम्न आत्मसम्प्रत्यय समूहों के छात्रों में दुश्चिंता, अभिप्रेरणा, उपलब्धि, बौद्धिकता में भिन्नता है। इन समूहों में लक्ष्य विसंगति और शैक्षिक उपलब्धि में कोई भिन्नता नहीं है। कोबल एवं मुसेक (2001) ने बताया कि शैक्षणिक उपलब्धि और आत्मसम्प्रत्यय की विभिन्न अनुक्रमिकाओं के बीच महत्वपूर्ण सहसंबंध है। हरबर्ट एवं डिक्स (2006) ने निष्कर्ष निकाला कि आत्मसम्प्रत्यय तथा लिंग दोनों एक

---

*प्राचार्य, मनसा शिक्षा महाविद्यालय, कुरूद, भिलाई नगर (छत्तीसगढ़)
**शोधार्थी, कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भिलाई नगर (छत्तीसगढ़)

[illegible] मोहंती ([illegible]) ने निष्कर्ष निकाला कि विद्यार्थी के लिंग के आधार पर आत्मसम्प्रत्यय और व्यक्तित्व की दृष्टि से कोई अंतर नहीं था। [illegible] (2011) ने यह निष्कर्ष निकाला कि कुछ क्षेत्र जैसे मानसिक क्षमता में छात्र, छात्राओं से अधिक अच्छे पाए गए। लिंग के कारण आत्मसम्प्रत्यय में भिन्नता पाई गई।

उद्देश्य :

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के उपलब्धि अभिप्रेरणा पर आत्म सम्प्रत्यय एवं लिंग का मुख्य एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव ज्ञात करना।

परिकल्पना :

H 1 : उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्राप्तांकों पर आत्म सम्प्रत्यय एवं लिंग का स्वतंत्र एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।

परिसीमा :

(1) प्रस्तुत अध्ययन छत्तीसगढ़ राज्य के बेमेतरा जिले के ग्रामीण शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 11वीं विद्यार्थियों तक सीमित है।

(2) प्रस्तुत अध्ययन हेतु न्यादर्श का चयन स्तरीत यादृच्छिक विधि के आधार पर किया गया।

न्यादर्श :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा पर उनके आत्मसम्प्रत्यय का प्रभाव जानने के लिए अध्ययन हेतु छत्तीसगढ़ राज्य के लिए बेमेतरा जिले के ग्रामीण परिवेश के कुल 466 विद्यार्थियों को न्यादर्श हेतु चयनित किया गया।

उपकरण :

उपलब्धि अभिप्रेरणा के मापन हेतु डॉ. बीना शाह द्वारा निर्मित उपलब्धि अभिप्रेरणा मापनी (1986) का तथा आत्मसम्प्रत्यय के मापन के लिए डॉ. एस.पी. अहलूवालिया (रिवाइसड 2005) द्वारा निर्मित "सेल्फ कॉन्सेप्ट स्केल" को उपकरण के रूप में चयनित किया गया। प्रस्तुत मापनी की वैधता एवं विश्वसनीयता उच्च है।

सांख्यिकीय विश्लेषण :

प्रस्तुत शोध में अंतःक्रियात्मक परिकल्पना की जाँच हेतु (2 x 2) प्रसरण विश्लेषण का प्रयोग किया गया।

परिणाम विवेचना :

H 1 : उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्राप्तांकों पर आत्म सम्प्रत्यय एवं लिंग का मुख्य एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।

प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्राप्तांकों पर लिंग एवं आत्म सम्प्रत्यय के प्रभाव का अध्ययन करना है। अतः सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु 2 आत्म सम्प्रत्यय x2 लिंग के लिए द्विदिश प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई है। इस प्रकार (2 x 2) द्विदिश प्रसरण विश्लेषण की गणना से प्राप्त परिणामों को तालिका क्रमांक 1 में दर्शाया गया है।

तालिका 1 : उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के उपलब्धि अभिप्रेरणा पर आत्म सम्प्रत्यय एवं लिंग के स्वतंत्र एवं संयुक्त प्रभावों के संदर्भ में प्रसरण विश्लेषण का सारांश

प्रसरण का स्रोत	वर्गों का योग	स्वतंत्रता की कोटि	मध्यमान वर्ग	F अनुपात
आत्म सम्प्रत्यय	178.165	1	178.165	0.973^{NS}
लिंग	166.562	1	166.562	0.910^{NS}
आत्म सम्प्रत्यय x लिंग	21.31	1	21.31	0.115^{NS}
त्रुटि	58041.693	317	183.097	-
सम्पूर्ण योग	58655.063	302		

NS = सार्थक नहीं

स्वतंत्र प्रभाव :

आत्म सम्प्रत्यय तथा लिंग :

तालिका क्रमांक 1 का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि विद्यार्थियों के उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्राप्तांकों पर आत्म सम्प्रत्यय तथा लिंग के मुख्य प्रभाव के लिए F मूल्य क्रमशः 0.973 तथा 0.910 है, जो कि df(1/317) पर सार्थकता के 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है अर्थात् उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्राप्तांकों पर आत्म सम्प्रत्यय तथा लिंग का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि आत्म सम्प्रत्यय तथा लिंग विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा में विभिन्नशीलता उत्पन्न नहीं करता है। इस परिप्रेक्ष्य में शून्य परिकल्पना कि विद्यार्थियों के उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्राप्तांकों पर आत्म सम्प्रत्यय तथा लिंग का मुख्य प्रभाव नहीं पड़ेगा, स्वीकृत की जाती है।

द्विकारक अन्योन्याश्रित प्रभाव :

आत्म सम्प्रत्यय x लिंग :

विद्यार्थियों के उपलब्धि अभिप्रेरणा पर आत्म सम्प्रत्यय एवं लिंग के संयुक्त प्रभाव का अध्ययन करने हेतु तालिका क्रमांक 01 का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि आत्म सम्प्रत्यय एवं लिंग का संयुक्त प्रभाव विद्यार्थियों के उपलब्धि अभिप्रेरणा पर सार्थक रूप से नहीं पड़ता है, क्योंकि इन कारकों के संयुक्त प्रभाव के लिये प्राप्त एफ मान F =0.115 स्वतंत्रता की कोटि (1, 317) पर 0.05स्तर पर सार्थक नहीं है। इससे स्पष्ट होता है कि आत्म सम्प्रत्यय एवं लिंग के मध्य की अंतःक्रिया का विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा पर संयुक्त एवं सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है, अतः परिकल्पना उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्राप्तांकों पर आत्म सम्प्रत्यय एवं लिंग का अंतःक्रियात्मक प्रभाव नहीं पड़ेगा, स्वीकृत की जाती है।

परिणाम :

निष्कर्षों से स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों के उपलब्धि अभिप्रेरणा पर आत्म सम्प्रत्यय तथा लिंग के मुख्य प्रभाव के लिए परिकल्पना स्वीकृत होती है। इसी प्रकार आत्म सम्प्रत्यय एवं लिंग की संयुक्त अन्योन्याश्रित प्रभाव के लिए परिकल्पना स्वीकृत होती है।

परिणामों की व्याख्या :

प्रस्तुत शोध के परिणामों से यह ज्ञात होता है कि विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय, लिंग का मुख्य प्रभाव उपलब्धि अभिप्रेरणा पर नहीं पाया गया। इसका कारण यह हो सकता है कि यह अध्ययन केवल ग्रामीण क्षेत्रों के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों पर

किया गया है और ग्रामीण क्षेत्र मे उपस्थित विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय में विभिन्नता नही पायी जाती है, क्योंकि वे अपने किशोरावस्था से ही रोजी–रोटी की तलाश में व्यस्त रहते हैं, जिसके कारण वे अपने बारे में सोच ही नहीं पाते हैं। लिंग का प्रभाव भी उपलब्धि अभिप्रेरणा पर नहीं पाया गया, क्योंकि ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थी चाहे वो छात्र हों या छात्राएँ वे अपने कार्यों में ही व्यस्त रहते हैं।

संदर्भ :

(1) नीमानारती, डी. एवं ज्ञानानादेवन, आर. (2007) : हाई स्कूल के विद्यार्थियों की उपलब्धि प्रेरणा एवं चिंता के मध्य संबंध पर अध्ययन, रिसेंट रिसर्चेस इन एजूकेशन एंड साइकोलॉजी, 12, एन.ओ. एस. I - II, 52–55.

(2) विद्याधर (2008) : माध्यमिक विद्यालयों के सामान्य जाति एवं जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों के मध्य उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं मानसिक योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन, रसेंट रिसर्चेस इन एजूकेशन एंड साइकोलॉजी, 12, एन.ओ.एस. III - IV, 82–86.

(3) सिंह, के. एवं कौर, जे. (2009) : उपलब्धि अभिप्रेरणा के परस्पर संबंध पर अध्ययन, इंडियन जर्नल ऑफ साइकोमेट्री एंड एजुकेशन, 40 (1–2), 208–211.

(4) Asthana (2011) : A study of effect of self concept and mental ability on achievement of secondary schools students of Varanasi, Journal of community guidance research, 28(1), 82-86.

(5) Deshmukh, N.H. (2000) : A study of anxiety, achievement motivation intelligent goal Discrepancy and academic achievement of junior college students with high & low self concept Indian Psychological Review, 54(1-2), 2-6.

(6) Kobal, D. and Musek, J. (2001) : "Self concept and academic achievement." Solvenia and france personality and Individual differences, Vol-30, No.5, pg. 887-899.

* * *